EDITORIAL

Unity and Tolerance

Unity for struggle and struggle to achieve the demands is the Traditional approach of Trade unions. It is told generally that united will win and divided will lose. It is a tasted truth. We should remember the thought of our unparallel Leader Com. O.P. Gupta Jee, who used to tell that "our head, may be broken but unity must be intact". The NFTE wants unity of the workers in real perspective. The Union and Associations irrespective to size and strength should united together at least for the common interest of the employees and to save our entity BSNL. All the unions and associations are claiming that they work to protect the interest of employees. They are responsible to uplift the social and economical status of the workers. If these ideologies are adopted honestly, Then Where is the question to remain ununited. Unity for struggle and struggle for survival. Situation through which the BSNL workers are passing is very critical and confusing. The unions and associations are the safety net for the workers, but there is no unity among all and the Govt/management is taking advantage of the situation.

All corner of working employees and their pressure grounds are to be more vigilant as the danger is coming fast before us. If we will not come under one umbrella with full unity keeping tolerance towards the colour and ideology of others the time will pass and nothing will be left to do.

The entire working class is under attack of neo liberalization. The wind is blowing towards privatization. Even the workers under Govt departments are not feeling themselves protected. All most all PSUs are under attack. In this situation only our unity with full tolerance will help us and it will be the weapon to fight and defeat the anti workers policy of any level and this unity will help to regain the losses of the entity also. If united approach for revival and survival of our beloved Company will be applied, certainly, the Company will come up at its past glorious stage.

Presently we are in situation where the workers are not getting their salary in time. The deducted amount from their salary is not being remitted to the concern organization. The cooperative societies are in position to collapse, but management is not anxious for that. The Govt after a long span of time has come forward with revival package. What is good or bad in it will be seen, but to remove the negative points from the plan and to achieve the goal of development for both the aspect total unity is need of the time. NFPTE/NFTE is the symbol of unification and it brought several unions and groups under one umbrella in November, 1954. We the members of NFTE and follower of Com. O.P. Gupta Jee should take task to bring total unity of workers in BSNL and for that the Leaders from branch level to Central headquarter try to bring all together keeping, the differences aside. **The trade union Centers of the country conducted a open convention on 30th September, 2019 in Parliament street and appealed to untie all section of workers and a decision was taken to go on one day total strike on 8th January, 2020 to oppose the policy of privatization and snatching the job of the working class. To achieve our target we should have to keep total internal unity so that we can move forward to catch hand and attract another with us with a polite and humble approach. NFTE Zindabad**

संपादकीय

एकता एवं सहिष्णुता

संघर्ष के लिए एकता और एकता बनाकर संघर्ष के द्वारा अपनी मांगें को प्राप्त करना, श्रमिक संगठनों की पारंपरिक पद्धति रही है। ऐसा कहते हैं कि एकताबद्ध होकर जीतते हैं और बिखराव होने पर खोना पड़ता है। यह परखा हुआ सत्य है। हमें अपने अतुलनीय नेता का. ओ पी गुप्ता जी की कथन को याद रखना चाहिए, वो कहा करते थे सिर फूटे परंतु एकता नहीं टूटे। एनएफटीई समस्त कर्मचारियों की वास्तविक परिपेक्ष में एकता चाहती है। कद और संख्या को नजरअंदाज करते हुए कम से कम कर्मचारियों के सामूहिक हित एवं बीएसएनएल की रक्षा के न्यूनतम मुद्दे पर पूर्ण एकता की आवश्यकता है। सभी संगठन ये दावा करते हैं कि वे कर्मचारियों के हित रक्षक हैं तो फिर न्यूनतम कार्यक्रम के साथ एकजुट होकर आगे बढ़ने में क्या बाध्यता हो सकती है। ऐसी स्थिति में पूर्ण रूप से एक होना और अपने को सुरक्षित रखते हुए आगे चलने में क्या दिक्कत होती है। अभी बीएसएनएल के कर्मचारी जिस दौर से गुजर रहे हैं, ये बहुत ही कठिन एवं भ्रामक है। श्रमिक संगठन को कर्मचारी अपनी सुरक्षा कवच मानते हैं परंतु ये सभी एकताबद्ध नहीं होते हैं जिससे सरकार/प्रबंधन लाभ उठाते हैं

सभी संगठनों और छोटे दबाव समूहों को ज्यादा जागरूक होने की आवश्यकता है क्योंकि खतरा तीव्र गति से सामने आ रहा है। ऐसे वक्त में यह नीति और रंग के प्रति सहिष्णुता रखते एकताबद्ध होकर कार्य नहीं करते हैं तो फिर आगे करने के लिए कुछ नहीं रह जाएगा। नवउदारीकरण के हमले सभी श्रमिकों एवं कामगारों पर लगातार जारी हैं। यहां तक कि सरकारी कर्मचारी भी अपने को सुरक्षित नहीं पा रहे हैं। लोक उपक्रमों पर हमले हो रहे हैं और कर्मचारियों के भविष्य अधर में है। ऐसी स्थिति में केवल हमारी संपूर्ण एकता ही हमारा हथियार हो सकती है, जिसके बदौलत हम सरकार के कर्मचारी विरोधी मंसूबे को चकनाचूर कर सकते हैं तथा हम अपने कंपनी के खोये हुए गरिमा को पुनः वापस ला सकते हैं। अगर हम एक होकर कंपनी के पुनर्जीवन एवं पुनरूत्थान के लिए कार्य करते हैं तो निश्चय ही हमारी कंपनी मजबूती के साथ खड़ी होकर अपनी गौरवशाली स्थिति पर विराजमान हो सकती है।

वर्तमान में हम ऐसे स्थिति में हैं जब कर्मचारियों को उनके वेतन समय पर प्राप्त नहीं हो रहे हैं। कर्मचारियों के वेतन से काटे गये रकम को संबंधित प्रतिष्ठानों को भुगतान नहीं किया जा रहा है। कर्मचारियों द्वारा संचालित सहकारी संस्थाएं धराशायी हो रही हैं। इस नाजुक स्थिति पर प्रबंधन चिंतित नहीं है।

सरकार लंबे समय के अंत के उपरांत एक पुनरूद्धार पैकेज लेकर आई है। हम पूर्ण एकजुटता एवं जागरूकता के साथ अगर इस पर दृष्टिपात करते हुए आगे नहीं बढ़ेंगे तो कर्मचारियों के साथ धोखा हो सकता है। सरकार द्वारा लिये गये पैकेज में कितनी अच्छाई और कितनी बुराई है इसका एकताबद्ध होकर आकलन करना और किसी खतरनाक बिंदु पर एकताबद्ध प्रहार करना होगा तभी हम कर्मचारियों की हितरक्षक होने का दावा कर सकते हैं।

एनएफपीटीई/एनएफटीई एकीकरण का प्रतीक है। नवंबर 1954 में का. ओ पी गुप्ता एवं अन्य महानायकों के नेतृत्व में अनेकों बिखरे हुए समूह को एक छतरी के नीचे लाने का ऐतिहासिक कार्य हुआ था। हम एनएफटीई के परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए कटिबद्ध हैं और इसके लिए शाखा से राष्ट्रीय मुख्यालय तक के प्रतिनिधियों को इस दिशा में कार्य करने होंगे।

हमें सारे भेदभाव को भूलकर दूसरे समूह एवं संगठन के प्रति सहिष्णुता एवं शालीनता के साथ व्यवहार करते हुए उनका हाथ पकड़ना होगा तभी हम पूर्ण एकता को हिराबल दस्ता बन सकते हैं और साथ ही कर्मचारियों के वास्तविक हित रक्षा की अगुवाई कर पायेंगे।

केंद्रीय श्रमिक संगठनों ने 30 सितंबर 2019 को संसद मार्ग पर श्रमिकोंका एक खुला कन्वेंशन आयोजित किया तथा समस्त संगठनों ने श्रमिक समुदाय पर होने वाले हमलों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया। उक्त कन्वेंशन ने सरकार के श्रमिक विरोधी नीतियों को वापस कराने एवं लोक उपक्रमों की सुरक्षा की गारंटी करने हेतु आगत 8 जनवरी 2020 को एक दिवसीय संपूर्ण हड़ताल की घोषणा की है। श्रमिक समुदाय का हिस्सा होने से हमें भी इस दिशा में कार्य करने होंगे। यह उद्घोषणा निजीकरण के विरूद्ध एवं श्रमिकों की रोजी छीनने के विरूद्ध है।

हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें इस हेतु हमें अपने संगठन के अंदर पूर्ण एकता बनाये रखना है तथा दूसरे के प्रति सहिष्णुता एवं शालीनता के साथ हाथ बढ़ाकर मुकम्मिल एकता को अंजाम देना हमारा फौरी कर्तव्य बनता है। एनएफटीई जिंदाबाद।